VOL- IX | ISSUE- IV | APRIL | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा की भूमिका का अध्ययन

निक्कू नेहरा, साहूवास,
(चरखी दादरी) हरियाणा

सारांश :

अतीत की घटनाओं का लेखा जोखा इतिहास कहलाता है, इसी दृष्टि से १८५७ का विद्रोह भारतीय इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। भारत का १८५७ के विद्रोह का एक अलग अध्याय है। ब्रिटिश साम्राज्य के अनुसार यह एक विद्रोह था परन्तु भारतीयों के लिए यह प्रथम स्वतंत्रता का संग्राम था। इसी की पृष्ठभूमि पर १९४७ में भारत ब्रिटिश मुक्त हो गया। यह वह संघर्ष था जिसमें प्रत्येक भारतीय का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष योगदान था। इस प्रकार इस संग्राम में हरियाणा का भी अपना योगदान रहा है। आज जिस भूखंड को हरियाणा कहा जाता है यह पहले पंजाब हुआ करता और भारतीय संसद द्वारा पंजाब पुनर्गठन अधिनियम के अनुसार १ नवम्बर १९६६ को इसे राज्य का दर्जा दिया गया। यह सत्य है कि १८५७ के समय हरियाणा नाम का प्रांत भारत के मानचित्र पर नही था परन्तु यह हरियाणा का भूखंड अवश्य था और आज की हरियाणा की पीढ़ी के पूर्वज भी अवश्य थे। हरियाणा भारत का वह भू भाग है जहाँ उन विचारों और मूल्यों की प्रतिस्थापना थी। भारत की संस्कृति हरियाणा के मूल्यों और राष्ट्रप्रेम का अपना अलग प्रकार का योगदान है। १० मई १८५७ का दिन प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ने के साथ हरियाणा के अम्बाला से भी जुड़ा हुआ है। १३ मई का दिन गुड़गाँव से जुड़ा हुआ है। यहाँ यह भी कहना होगा कि इन दो जिलों के अतिरिक्त रेवाड़ी, करनाल, पानीपत, खरखौदा, रोहतक का अपना महत्त्व है, जहाँ के लोगों ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अपना उत्सर्ग किया था। हरियाणा के निवासी जिनमें सरदार थे, चौधरी थे, कृषक थे और मजदूर सबके सब ब्रिटिश शासन को लेकर आग उगल रहे थे। यह स्पष्ट है कि इस संग्राम में हरियाणा के लोगों का प्रमाणिक प्रेम देश को समर्पित था।

मूल शब्द :
स्वतंत्रता, जीवन, प्रमाणिक प्रेम, सरदार-चौधरी, अम्बाला, रोहतक, रेवाड़ी, जीवन दर्शन, परम्परागत, विद्रोह, नूर मुहम्मद, राव तुलाराम, छावनी।

प्रस्तावना :

ईस्ट इंडिया कम्पनी भारत एवं अन्य पूर्वी देशों से व्यापार करने के उद्देश्य से भारत आयी थी परन्तु भारत के उपभोग के लालच से सौदागर से शासक बने और शासक भी इस दर्जे के जिनमें आदर्श और सिद्धांतों के साथ-साथ मूल्यों के लिए कोई स्थान नही था। शोषण करने के लिए उन्होंने भारतीयों को आपस में लड़ाना, उकसाना, बहलाना और फुसलाना आरम्भ कर दिया था। उनकों भ्रष्ट बनाना, प्रलोभन देना उनकी नियति में शामिल हो गया। वस्तुतः कम्पनी को लेकर आए सौदागर अंग्रेज सफलता की सीढ़ियाँ चढने लगे।

यह कम्पनी की सफलता भारतीयों के लिए किसी हादसे से कम नही थी। इस बात को लेकर अपनी पुस्तक 'विश्व इतिहस की झलक' में लिखते है, ''भारत के किसानों की स्थिति संसार में सबसे अधिक दर्दनाक है, अंग्रजों के कानूनों ने संसार के सबसे उपजाऊ देश में पीस डालने वाली अर्द्ध भुखमरी की हालत पैदा कर दी है। हमारे किसानों की शंकित और हताश दृष्टि वाली धंसी हुई आँखों से अधिक विषादमय दृश्य नजर नही आ सकता था। समाज के हर वर्ग ने उसकी पीठ की सवारी की है। ऐसी हालत में यदि उसकी पीठ टूट रही है तो ताज्जुब क्या?''[१]

इस प्रकार किसान कम्पनी की क्रूरता का प्रथम शिकार हुए, दूसरा शिकार हुए कारीगर जिनकी धाक दूर-दूर तक फैली हुई थी। उनकी कम्पनी की नीति ने

मृत्यु की घंटी बजा दी। यहाँ कम्पनी ने वही बात दोहराई जिसको कहते हैं दूसरे का घर उजाड़कर अपना बसाना। इसके साथ कुछ राजनैतिक और सामाजिक कारण भी थे। रेल का अविष्कार भी इसी के मध्य एक घटना थी। राजा और रवाब इसी के मध्य थे, वे भी इनकी नीतियों के शिकार थे। यह सब १८५७ के रूप का आधार थे, जिसमें प्लासी और चर्बी वाले कारतूसों का भी अपना योगदान। इस संदर्भ में जितने भी कारण गिनाए जाए उन सबका एक ही आधार कम्पनी की क्रूरता। जीवन और समाज के मध्य केवल अंग्रेजों ने सांस को छोड़ा था, अब यह पूरे भारत में आक्रोश का आधार बन गया था, हरियाणा भी भारत का हिस्सा था, यहाँ के लोग इस नीति से प्रभावित थे और अंग्रेजों के प्रति आक्रोश वाले थे। इसलिए इस १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा का अपेक्षित योगदान है। जिन परिस्थितियों में हरियाणा के निवासियों ने इस प्रकार के योगदान को सराहना की दृष्टि से देखा जा सकता है। कहा जा सकता है कि यह योगदान हरियाणा के लोगों के देश प्रेम और देशभक्ति के परिणाम स्वरूप था।

स्वतंत्रता संग्राम का आधार :

जिन अनैतिक नीतियों को लेकर ब्रिटिश कम्पनी भारत में अपना प्रभाव बढ़ा रही थी, उनमें भारत विरोधी मानसिकता प्रथम थी। भारत वासी इतने दुखी हो गए थे कि अंग्रेजों को लेकर उनमें नफरत भर गयी थी। ''३० दिसम्बर १८०३ को दौलतारांव सिंधिया ने सिरजी अंजनगाँव की संधि द्वारा हरियाणा प्रदेश ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी को सौंप दिया और प्रशासन के लिए रेजीडेंट की नियुक्ति करके इसको बंगाल प्रेजीडेंसी में मिला दिया।''[२] इस प्रकार वर्तमान हरियाणा जिसमें पानीपत, सोनीपत, समालखा, गन्नौर हवेली पालम, नूह, हथीन, तिजारा, भोरा तपकुरा, सोहना, रिवाड़ी, इंद्री, पलवल, दादरी के परगने शामिल थे। फरूखनगर, वल्लभगढ़, लोहारू, पटौदी, फिरोजपुर झिरका ये सब स्थानीय सरदारों के प्रभाव में थी। इतना होने पर भी ब्रिटिश लोग अपनी नीतियों के द्वारा अनैतिक रूप से सबको प्रभावित करते थे जो सरकार उनकी बात नही मानते थे तो वो मनवाते थे। उदाहरण के लिए चाहे ८७ गाँवों का परगना रेवाड़ी का राव तेतू हो, चाहे रोहतक, महम, बेरी, हिसार, हांसी, बरवाला, जमालपुर का सरदार बम्बू खाँ हो, चाहे होडल, पलवल का मुर्जता खाँ हो, चाहे बल्लभगढ़ का राजा बहादुर सिंह हो। चाहे करनाल का नूर मुहम्मद हो, चाहे कैथल का भाई लाल सिंह हो चाहे लाडवा का गुरूदत्त हा। सब परेशान थे।

प्लासी के युद्ध ने इस परेशानी और जुल्म सहने की शक्ति को खत्म कर दिया, इसी कड़ी में सराहनीय भूमिका डलहौजी की विलय की नीति ने निभाई। सैनिक आक्रोश में चर्बी वाले कारतूस की योजना भारतीयों के लिए इमान और चेतना दोनों पर घातक प्रहार था। इस प्रहार ने इस क्रांति को तीली लगाने का कार्य किया। चाहे व्यक्तिगत कारण थे या अन्य सामूहिक कारण थे सब के सब अंग्रेजों के विरोध में थे। चर्बी वाले कारतूसों जिनकों इनफील्ड राइफ्लों को लोड़ करने से पूर्व दाँतों से खोलना पड़ता था, बंगाल के बैरकपुर छावनी में एक अंग्रेज अफ्सर की मौत का आधार बने सैनिक मंगल पांडे ने इस की शुरूआत की २९.०३.१८५७ का। इस प्रकार पूरी छावनी में विद्रोह का स्वर गूंज उठा। ''जिन बातों की ब्रिटिश ने कभी कल्पना भी नही की थी। उन बातों ने क्रांति की इस ज्वाला को भड़काने का कार्य किया और इस ज्वाला में हरियाणा के निवासियों ने तन मन धन का सहयोग दिया।''[३]

ब्रिटिश शासन की स्थापना का इतिहास एवं स्वतंत्रता संग्राम :

भारत में ३० दिसम्बर १८०३ में एक संधि के आधार पर ब्रिटिश की स्थापना हुई थी, यद्यपि १८५७ का संग्राम इसी विरोध की भावना का प्रतिफलन है। विरोध का विद्रोह बनना स्वाभाविक है। दूसरा नई व्यवस्था का पुरानी व्यवस्था को परिवर्तित कर रही थी।

इस का तृतीय कारण यह था कि नयी व्यवस्था पुरानी व्यवस्था का विश्वास मत हासिल करने और उनको अपने साथ एकत्र करने में नाकाम रही।

मुगल राज कवि गालिब लिखते हैं, ''दिल्ली में ११ मई १८५७ के सम्बन्ध में यह महसूस किया जा सकता है। उस दिन मनहूस में ईर्ष्या-द्वेष से उन्मत, अभागे कुछ सैनिकों ने शहर पर आक्रमण कर दिया। उनमें प्रत्येक व्यक्ति निर्लज्जा एवं विक्षुब्ध तथा अपने स्वामी के प्रति हिंसापूर्व एवं घृणा से परिपूर्ण है।''[४] इस बात का अर्थ यह सब लोग इस व्यवस्था से खुश नही थे। उस समय जनता में अराजकता फैली हुई है। १८०५ में कर्नल बर्न में सिख सरदारों से युद्ध किया था। जो इस अराजकता का परिणाम था। यह सम्भव था जनता इस व्यवस्था को स्वीकार करने को तैयार थी। इस अव्यवस्था को लेकर १८१० में एडवर्ड गार्डनर कर्नल जेम्स के साथ हिसार, भिवानी, रोहतक होकर रानिया की तरफ बढ़ा जो जनता को खूब बुरा लगा पर कुछ कह ना पायी। ''मेट फाक के अनुसार प्रत्येक गाँव में चारों का अड्डा बन गया था, जो दिल्ली तक छापामारी और लूट खसूट करते थे। यह सब कुछ सामान्य करना व्यवस्था करना अनुकूल नही था। १८१९ में हरियाणा को सिविल आयुक्त को सौंप दिया और तीन मंडल बना दिए। १८२५ पुनः रेजीडेंट को सौंप दिया। १८३३ में इसको उत्तर पश्चिम प्रांत बना दिया। इसके बाद इसको दिल्ली मण्डल का भाग बनाकर जिलें में विभाजित कर दिया। पानीपत, हिसार, रोहतक तथा गुड़गाँव इसके जिले थे। इसके बाद जिलों की तहसील बनायी गयी जिसमें लम्बरदार और पंटवारियों की सहायता से वसूली की जाती है।''[५]

इस प्रकार ब्रिटिश के अन्तर्गत हरियाणा के लोग अपनी जीवन की व्यवस्था से दुखी थे ओर समाज की नीतियों की अह्वेलना करके विद्रोह की भावना धीरे-धीरे पनप रही थी और हरियाणा मण्डल के तत्कालीन ८७ परगनों के लोगों में असंतोष की भावना इसका मुख्य आधार थी। यहाँ यह भी कहना संगत होगा कि कुछ स्थानीय लोग अंग्रेजों की नीतियों के अंधभक्त थे। इसलिए समाज के लोगों भय और प्रलोभन के सहारे किसी भी प्रकार से अंग्रेजी व्यवस्था का सफल बनाने के लिए कार्य कर रहे थे।

ब्रिटिश शोषण की कुनीतियां :

कहते हैं कि एक बार शेर के मुँह में मनुष्य का मांस लग जाए तो वह नरभक्षी हो जाता है। यही कम्पनी की ब्रिटिश का हाल था। जब यह कम्पनी भारत में आयी तब भारत विश्व का महान और कुशल औद्योगिक देश था। रेशम, सूती, पोपलीन, मसाले, नील, चीनी, औषधी, हीरे, सोना, चाँदी सब कुछ उत्तम दर्जे का था और विभिन्न देशों से व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित थे। यह कम्पनी के लिए एक धन बटोरने की क्रिया थी। कम्पनी ने भारत के व्यापार को पूर्णतः नोच लिया। इसी रूप में कम्पनी की कुरीतियों का शिकार हुई भारत की कृषि। मालगुजारी के लालच में कम्पनी ने कृषि व्यवस्था में ठेकेदारी प्रथा का संयोजन किया। ''लार्ड कार्नवालिस ने भूमि का स्थाई प्रबंध करके जमींदारी को बढ़ावा दिया और मालगुजारी का ९० प्रतिशत भाग सरकार के लिए निश्चित कर दिया। परन्तु जमींदार कृषकों से कितनी मालगुजारी ले, इस पर कोई कानून नही बनाया।''[६] फलतः शोषण की प्रवृति को बढ़ावा मिला क्योंकि जमींदारों के ठाठ-बाट भारतीय होने पर भी कैसे पूरे होते। यहाँ कहना संगत होगा कि बंगाल जो एशिया का सबसे उपजाऊ क्षेत्र था, इसके बहुत से क्षेत्र मरूस्थल में बदल गए। खेत जोते नही जाते थे, दूर-दूर तक झाड़ियां उग आयी थी कृषक लूटा जाता था और कारीगर सताया जाता था।

इस प्रकार जीवन और शासन की कुनीतियों से इतने तंग आ गए थे जिसकों शब्दों में बयां करना आसान नही था। औद्योगिक क्रांति के कारण इंग्लैंड में उद्योग स्थापित हो गए, सारा कच्चा माल भारत से जाता था, जिससे भारत के उद्योगों को तख्ती पुत गयी। ''सन् १८१३ में ९० लाख पौंड के मूल्य की कपास जाती थी इंग्लैंड और इसकी राशि में दिनों दिन

वृद्धि होती रही थी।''[७] अब इसका दूसरा स्वरूप और देखने को आया, कारीगरी चौपट हुई कोई बात नही, कृषि चौपट हुई कोई बात नही, उद्योग चौपट हुई कोई बात नही परन्तु भारतीयों ने अंग्रेजों को दास बना लिया जिससे लगा कि अब अंग्रेजों के अन्याय की अति हो गयी। दास के साथ अत्याचार और भूखमरी में भारतीयों से नही रहा गया, यह अब लावा बन गया और क्रांति की उपयुक्त जमीन को खोजने लग गया था। बंगाल के चर्बी वाले कारतूस इसकी उपयुक्त जमीन बने।

हरियाणा की भूमिका :

हरियाणा वीरों और देशभक्तों की भूमि होने के साथ-साथ दमन कारी और अत्याचारियों का विरोध करने वालों की भूमि है। इसी लिए १८५७ के समय हरियाणा का आक्रोश अम्बाला से लेकर दिल्ली तक खूब फुटा और खूब स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका निभायी। १० मई १८५७ को मेरठ तथा अम्बाला के सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। अगले दिन यानि कि ११ मई को दिल्ली में गड़बड़ी हो गयी, १३ मई को गुडगाँव के निवासी भी भड़क उठे। इसके लिए जिला मेजिस्ट्रेट को आदेशित किया गया कि इसे नियंत्रित परन्तु कर ना सका नाकाम रहा। यहाँ एक बात पर ध्यान देना होगा कि केवल सैन्य विद्रोह नही था। यह स्वतंत्रता का संग्राम था जिसमें प्रत्येक हरियाणवी का अपना योगदान था क्योंकि अंग्रेजों ने सबके हितों पर कुठाराघात किया था किसी को भी नही छोड़ा था। ११ मई १८५७ के दिन मेरठ और अम्बाला के संग्रामियों ने लाला किले में एक बैठक की और विमर्श के पश्चात् अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफ़र को अपना नेता घोषित कर दिया। यहाँ यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि दिल्ली उत्तर पश्चिमी प्रांत में हरियाणा से भिन्न नही था। ''इसमें रेवाड़ी के राव तुलाराम, झज्जर के अब्दुल सयैद खान, हिसार के मुहम्मद अजीम की भूमिका सराहनीय रही और योगदान अविस्मरणिय बन गया।''[८] हडसन हिसार मण्डल का लैफ्टीनेंट था, उसको नाकों चने चबा दिए थे। करनाजल ह्यूज ने भागकर जान बचाई थी। जनरल कोटलैंड ने रानिया से परास्त होना पड़ा था। इतना ही नही। लाडवा में पीचरसैन को पसीना आ गया था और कैथल में मैकनीज लड़ रहा था। अम्बाला में रोपड के सरदार की तूती बोल रही थी, यही नही आम जनता का सहयोग न मिलने के कारण १८५७ के विद्रोह में अंग्रेजी सेना और सेना नायकों की हालत पतली होती जा रही थी।

इंग्लैंड की संसद और कम्पनी के शासकों ने इस बात की कल्पना भी नही की थी कि भारत में इतने बड़े पैमाने पर इस प्रकार विद्रोह होगा जो स्त्री-पुरूष, बूढे-बच्चे, जमींदार-बनिये, राजा और नवाब, सैनिक और सीविलियन सबका उद्देश्य एक बनाकर चलेगा। अंग्रेज इस विद्रोह हरियाणा को विशेषता के साथ महसूस कर रहे थे।

उपसंहार :

सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम का परिणाम चाहे कुछ भी हो परन्तु यह तो निश्चित है कि यहाँ भारतीयों ने अंग्रेजों का मुखर विरोध सर्वप्रथम किया था और भारत को स्वतंत्र करवाने के लिए सर्वास्व होम कर दिया था। इस क्रांति के नेता शहंशाह बहादुर शाह जफ़र की गिरफ्तारी बड़ी कारूणिक थी, बाद उनको रंगून भेज दिया, जहाँ उनकी मृत्यु हो गयी। इसी प्रकार की एक और घटना थी कि नील नाम का एक अंग्रेज सेनापति इलाहाबाद से कानपुर के रास्ते भर आदमियों को मारते हुए फांसी पर लटकाते हुए चला गया, यहाँ तक कि सड़क के किनारे एक भी पेड़ ऐसा नही था जो फांसी ना झूला हो। हरे भरे रास्ते के सभी गाँव समूल नष्ट कर दिए गए। भारतीय इतिहास का इससे दर्दनाक किस्सा और नही सुना गया।

अस्तु, सम्पूर्ण भारत ने इस क्रांति में बहुत कुछ खोया, हरियाणा भी इससे अछूता नही रहा। बेशुमार निर्दोष हरियाणावासी इसका शिकार हुए। अंग्रेजों विद्रोहियों और उनके परिवारों पर जुल्म करने

में कोई कसन ना रखी। इसका अनुमान लगाना संभव नही है कि हरियाणा की इस स्वतंत्रता संग्राम की भूमिका में उसने क्या-क्या खोया है।

संदर्भ सूची :

१. विश्व इतिहास की झलक, जीवन सिंह, पृ. ७४
२. हरियाणा का इतिहास, एक सर्वेक्षण, बुद्ध प्रकाश, पृ. ७३
३. वही, पृ. ३९
४. गालिब का गलियारा, बुद्ध प्रकाश, पृ. १०२
५. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, मदन लाल शर्मा
६. हरियाणा का इतिहास, एक सर्वेक्षण, बुद्ध प्रकाश, पृ. १०१
७. वही, पृ. ९६
८. भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास, मदन लाल शर्मा, पृ. ७६

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com